कला व संस्कृति के बिना समाज निष्प्राण हो जायेगा

ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत)। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा ज्ञानसरोवर परिसर में ''स्वर्णिम विश्व में कलाकारों का योगदान'' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रमुख वक्ताओं ने कला व संस्कृति को सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बनाने का आहवान करते हुए चेतावनी दी कि कला व संस्कृति के बिना समाज निष्प्राण हो जायेगा। देश को जोड़ने में कलाकारों की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए वक्ताओं ने कहा कि कला व संस्कृति को शाश्वत बनाने के लिए कलाकारों के जीवन में पारदर्शिता, पवित्रता व मेडिटेशन का समावेश होना आवश्यक है।

सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए दीप प्रज्जवलित करने वालों में मुख्य अतिथि गुजरात प्रदेश कांग्रेस की सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष दिनेश कुमार पटेल, 19 भाषाओं में गायन के आधार पर ख्याति अर्जित कर चुकी एस.जानकी बैंगलोर, हरियाणा के कवि रूपनारायण चानना, मुम्बई से आए फिल्म व टी.वी.निदेशक संदीप गुप्ता, बैंगलोर की फिल्म व टी.वी. कलाकार रेखा राव, 2007 में मि.इंडिया चुने गये भारत कुन्द्रा, निफा संस्था के अध्यक्ष प्रितपाल सिंह पन्नु के अलावा ब्रह्माकुमारी संस्था में कला व संस्कृति प्रभाग के अध्यक्ष ब्र.कु.रमेश शाह, शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.मृत्युंजय, ज्ञानसरोवर की निदेशिका डॉ.निर्मला शामिल थे।

इससे पूर्व स्वागत सत्र में विज्ञान एवं इंजीनियरिंग प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ब्र.कु.मोहन सिंघल ने संस्था के इतिहास व उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। प्रितपाल सिंह पन्नु ने इस अवसर पर कहा कि सुरक्षा, सम्मान और समता संसार से लुप्त होते जा रही हैं। पूरी दुनिया में प्रकाश फैलाने के दावे किये जाते हैं लेकिन अभी तक आम आदमी की झोपड़ी में अंधेरा छाया हुआ है। इस स्थिति को बदलने में कलाकार महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। अन्य वक्ताओं ने कहा कि इस बात का फैसला कलाकारों ने करना है कि उनकी प्राथमिकता स्वर्णिम संसार का निर्माण करने में है या फिर विध्वंस फैलाने में है। कला का उद्देश्य मनोरंजन तक सीमित न होकर जीवन को संस्कार युक्त बनाना एवं सुख-शांति का प्रसार करना होना चाहिए।

ब्र.कु.रमेश शाह ने कहा कि जीवन में व्याप्त विकारों पर विजय प्राप्त कर श्रेष्ठता हासिल की जा सकती है। कलाकार दैवीय संस्कृति के निर्माण में सहभागी बनें। उन्होने स्पष्ट किया कि ब्रह्माकुमारी संस्था का उद्देश्य धर्म परिवर्तन नहीं बल्कि संस्कारों का परिवर्तन करना है।

ब्र.कु.मृत्युंजय ने कहा कि सकारात्मक लेखन व चिन्तन से समाज को सही दिशा प्रदान की जा सकती है।

डॉ.निर्मला ने कहा कि धनोपार्जन से भौतिक सुख तो मिल सकते हैं लेकिन आत्मीय सुख व शांति की प्राप्ति नहीं होगी। मन की शांति ही अक्षुण्ण सम्पत्ति है जो विकट परिस्थितियों में भी हमारे काम आती है।

ज्ञानसरोवर में पहली बार आये फिल्मी हस्तियों रेखा राव व संदीप गुप्ता ने कहा कि यहां पांव रखते ही यह अहसास हो गया कि इसी स्थान ने पूरे विश्व में पावनता व शांति के संदेश प्रवाहित होते हैं। उन्होने कहा कि अच्छे कर्म करने से परमात्मा की अनुभूति स्वयमेव होने लगती है। यदि कलाकार आध्यात्मिकता से जुड़ जायें और मेडिटेशन को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बना लें तो स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन का जो लक्ष्य ब्रह्माकुमारीज ने निर्धारित किया है, उसकी प्राप्ति आसान हो जायेगी।

स्वागत व उद्घाटन सत्र की शुरूआत मधुरवाणी ग्रुप के स्वागत गान तथा दिल्ली, पुणे व उड़ीसा से आए कलाकारों के नृत्यों से हुई।

आयोजकों की ओर से कला व संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु.कुसुम, मुख्यालय संयोजक ब्र.कु.दयाल व ब्र.कु.सतीश ने देश के विभिन्न प्रान्तों से आए कलाकारों के प्रति आभार जताया।

कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि सुप्रसिद्ध गायिका एस.जानकी ने दर्शकों के आग्रह पर ''राम नाम रस पी ले मनवा...'' भजन गायन द्वारा वातावरण को भावविभोर कर दिया। वहीं दिनेश पटेल ने फिल्मी दुनिया के दिवंगत कलाकारों की स्मृति में एक मिनट का मौन धारण करवाने के बाद ''ऐ मेरे प्यारे वतन, ऐ मेरे बिछुड़े चमन, तुझपे दिल कुर्बान...'' गीत गाकर अद्भुत माहौल पैदा किया।

फोटो कैप्शन -

3 ज्ञानसरोवर 1.जेपीजी.ज्ञानसरोवर में अखिल भारतीय कला व संस्कृति सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए विशिष्ट अतिथि।

3 ज्ञानसरोवर 2. जेपीजी. उपस्थिति की एक झलक।

3 ज्ञानसरोवर 3.जेपीजी. उड़ीसा की बालिका अभिवादन नृत्य प्रस्तुत करती हुई।